International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume IX, Issue IV, July – August 2022 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.908

वर्तमान परिवेश में पनिका जनजातीय महिलाओं की स्थिति–पुष्पराजगढ़ तहसील (जिला–अनुपपुर, मध्यप्रदेश) के संदर्भ में

डॉ. मीरा माधुरी महंत, (सहा. प्राध्यापक वनस्पति शास्त्र),
डॉ. जितेंद्र चौधरी (सहा. प्राध्यापक समाज शास्त्र)
ज्ञानचंद्र श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

सारांश :– जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका बेहद अहम होती है। वे परिवार व समाज की केन्द्र बिन्दू होती हैं। भारतीय जनजातीय समाज में लिंगानुपात में महिलाओं की स्थिति पुरूषों से सदैव बेहतर रही है। पनिका समाज की महिलायें पूर्व में पारिवारिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में अधिक सक्रिय रही हैं, किन्तु वर्तमान में बदलते परिवेश और नीतिगत बदलाव के कारण न सिर्फ अपने समाज वरन् बाहरी समाज में भी अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं। जो न सिर्फ पनिका समाज अपितु राज्य तथा देश के लिए सुखद संदेश है।

The role of women in tribal society is very important. They are the backbone of the family and society. The position of women has always been better than men in tribal society in terms of sex ratio. The women of Panika society have been more active in the family, economic, social field in the past, but due to the changing environment & policy changes, they are making a remarkable presence not only in their own society but also in the outside society. This is a happy message not only for the Panika society but also for the bright future of the state and the country.

मुख्य शब्द :– जनजातीय महिला, महिला सशक्तिकरण, अर्थिक स्वावलम्बन, परिवेश।

प्रस्तावना :–

इस पुरुष प्रधान समाज में आज भी महिलाओं को सम्मान जनक स्थान नहीं दिया जाता, चाहे वह घर से बाहर जाकर नौकरी करें या घर में चौबीसो घण्टे काम करें। **''एक सशक्त समाज का निर्माण करने के लिए महिलाओं को सशक्त व स्वस्थ्य बनाना बेहद जरूरी है तभी एक सभ्य समाज का निर्माण हो पाएगा''**– पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु। वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिये अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया जा रहा है लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर तक उचित समय पर और ढ़ंग से न होने के कारण महिलाओं को इनका लाभ नहीं मिल पा रहा है। लेकिन यह भी सत्य है कि वर्तमान परिवेश में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार एवं बदलाव आये हैं। महिलाओं ने अपने हुनर से सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान उपस्थिति दर्ज कराकर देश–विदेश में खूब प्रसिद्धि बटारे हैं। **''महिलाएं स्वयं इतना सबल हैं कि खुद की ही नहीं अपितु संपूर्ण मानव जाति के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ''– महात्मा गॉधी।** महिलाओं को अपना ख्याल रखने के साथ–साथ अपने परिवार का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है। वह जीवन भर किसी न किसी रुप में समाजिकता के डोर में बंधे बेटी, बहन, मॉ, सास, दादी, नानी, पत्नि इत्यादि रिश्तों को ईमानदारी से निर्वहन करती है। इन सभी रिश्तों को निभाने के साथ–साथ अपने परिवार के उज्जवल भविष्य और आर्थिक सुदृढ़ता के लिए वह पूरी शक्ति से नौकरी भी करती है।

पनिका जनजाति का परिचय :–

पनका या पनिका मुख्य रुप से **द्रविड़ वर्ग** की जनजाति है। पनिका जनजाति मुख्य रुप से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य में ज्यादातर निवास करती हैं। इसके अलावा उत्तरप्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश में पाये जाते हैं। यह जाति सन 1949 से ही अनुसूचित जनजाति में सूचीबद्ध है। सत्र 1971–72 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पारित जाति संशोधन कानून में छत्तीसगढ क्षेत्र में निवासरत पनिका समाज जनजातीय दायरे से बाहर हो गए। लेकिन वर्तमान में मध्यप्रदेश राज्य के कुछ पिछड़ी और आदिवासी जिलों के निवासी पनिका समाज आज भी जनजाति संवर्ग में आते हैं। पनिका समाज जनजातीय होने के कारण पूर्व से वनों और जंगलों में निवास करती रही है। कपड़ा बुनना इनका पेशा था। समाज के लोग तत्कालिन समय में राजा–महाराजाओं के यहां अपनी सेवायें देते थे और बदले में उन्हें राजा के यहां से जीवन निर्वहन की सामाग्री मिल जाती थी। अपनी सेवाओं में वे राजा के बातों को नगर, गॉव या बस्ती में सभी जनमानस को प्रचारित एवं प्रसारित कराने का काम करते थे। समाज के

लोगों की भागीदारी सीधे तौर पर धीरे–धीरे राज दरबार में प्रमुख दासों के रुप में बढ़ने लगे और वही पहचान बन गई। जिससे वे अपने नाम के बाद दास शब्द का प्रत्यय लगाना शुरु कर दिए जो वर्तमान में पुरुषों के नाम के साथ परंपरागत रुप से जुड़ी रहती है। यह जनजाति दो वर्गों में विभक्त है :– बागत पनिका एवं साकत पनिका। बागत पनिका समाज के लोग ज्यादातर कबीर दास के उपदेशों का अनुसरण करते हैं और साकत पनिका समाज शक्ति के उपासक होने के साथ–साथ अपने घरों में उनकी स्थापना करके भी रखते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. वर्तमान परिवेश में पनिका जनजातीय महिलाओं की स्थिति को प्रस्तुत करना।
2. पनिका जनजातीय महिलाओं की शैक्षणिक एवं स्वास्थ्यगत स्थिति का अध्ययन करना।
3. पनिका जनजातीय महिलाओं की आर्थिक, समाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन :–

महिला सशक्तिकरण और नारीवाद (शर्मा पी.डी. – 2017) नामक पुंस्तक में बताया गया है कि ''मानव समाज में महिलाओं का अपना अलग ही अस्तित्व है, उनके बिना समाज की कल्पना करना संभव ही नहीं है। नारी जितनी नम्र स्वभाव की होती है उतनी ही वह धैर्यवान, सहनसील और कठोर भी होती है। आज नारी सभी क्षेत्रों में पुरुषों के मुकाबले आगे हैं।'' **आज के परिवेश में नारी** (जयति गोयल – 2013) नामक पुस्तक में गॉवों के महिलाओं का स्पष्ट चित्रण किया गया है। ''गॉव देहात में रहने वाली महिलाओं के उत्थान के बिना महिला समाज का सर्वांगीण विकास नही हो सकता। उन्होने देश में हो रहे महिला उत्पीड़न के आकड़े प्रस्तुत कर यह स्पष्ट किया है कि असुरक्षा का भय समाज के प्रगति के लिए सबसे बड़ी बाधा है।'' **घरेलू हिंसा एवं महिला मानवाधिकार** (जैन एवं अन्य – 2018) के द्वारा किये गये शोध में बताया गया कि ''घरेलू हिंसा के कारण महिलाओं का मानसिक, आर्थिक, शारीरिक एवं समाजिक रुप से शोषण एवं महिला उत्पीड़न के आकड़े बढने लगे हैं।'' **वर्तमान परिवेश में मुरिया जनजाति महिलाओं की स्थिति** (एस.तिर्की – 2021) के द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि समाज की परंपराओं की तुलना में लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के तहत शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्य समाजिक निर्णयों में सहभागिता, राजनीतिक झुकाव, खेल के प्रति रुचि और अन्य योजनाओं के लाभ ने महिला समाज को खुलकर आगे लाने में प्रगति के पर लगा दिए हैं। **भारतीय महिलाओं की दिशा एवं दशा** (शालिनी तिवारी – 2017) नामक पुस्तक में ''रुढ़ीवादी और पुरुष प्रधान समाज में कुछ जगह आज भी महिलाएं चारदिवारी में रहकर रुढ़ीवादी परंपरा को झेल रही हैं इसका मुख्य कारण पुरुषों के मानसिकता में परिवर्तन नहीं होना है, परंतु महिलाएं आज अपने स्वर्णिम भविष्य के नींव रखने और उन्हें मजबूत करने के लिए तत्पर हैं।''

अध्ययन क्षेत्र एवं शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश राज्य के अन्तर्गत अनुपपुर जिले के पुष्पराजगढ़ तहसील में आने वाले 05 गॉवों, अमदरी (1557), बेनीबारी (1509), पिपरखुंटा (1191), गिरवी (584) एवं बिलासपुर (1118) का चयन किया गया है। इन ग्रामों में निवासरत जनसंख्या का आंकड़ा 2011 के जनगणना के अनुरुप अंकित है।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु ग्रामों का चयन उद्देश्य मूलक प्रविधि के द्वारा तथा चयनित 50 परिवारों में 50 महिलाओं का चयन दैव निर्देशन पद्धति द्वारा किया गया है। जिसमें प्रत्येक गॉव से 10 परिवारों का चयन किया गया है। डाटा का चयन पनिका समाज और गॉवों के नागरिकों का साक्षात्कार, समूह चर्चा, अर्द्धसहगामी अवलोकन तथा सांस्कृतिक रहन–सहन के आधार पर प्रविधियों का चयन किया गया है। पनिका जनजाति मुख्य रुप से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य में ज्यादातर निवास करती हैं। इसके अलावा उत्तरप्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश में पाये जाते हैं। यह जनजाति दो वर्गों में विभक्त है –: बागत पनिका एवं साकत पनिका। बागत पनिका समाज के लोग ज्यादातर कबीर दास के उपदेशों का अनुसरण करते हैं और साकत पनिका समाज शक्ति के उपासक होते हैं और घर में देवी–देवताओं को स्थापित कर उनकी उपासना करते हैं।

परिणाम एवं विश्लेषण :–

संसार में ऐसा कोई समाज नहीं है जो प्रगतिशील समाज कहलाने और स्वस्थ्य समाज के रुप में स्थापित होने के लिए महिलाओं के महत्वपूर्ण अवदान पर निर्भर ना हों। किसी भी देश के विकास के लिए वहॉ के समस्त परिवारों को शिक्षित एवं समझदार होना अति आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि महिलाएं परिवार और समाज के जीवन तंत्र की दिशा एवं दशा का निर्धारण करती हैं। वे शैशव को युवा पीढ़ी के रुप में सृजित करती हैं और उनकी इस महत्वपूर्ण योगदान पर समाज का उन्नति या अवनति निर्भर करती है। निम्नांकित

तालिका से वह स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित पनिका जनजातीय महिलाओं की स्थिति क्या है ?

तालिका क्र. (01):– समाजिक क्षेत्रों में पनिका जनजातीय महिलाओं की भूमिका
(म. सं. = महिला संख्या)

क्र.	गॉव का नाम	परिवार संख्या	समाजिक निर्णयों में		जीवन साथी का चयन करन में		पुनर्विवाह पर निर्णय		दैनिक जीवन के निर्णय में		घरेलू कार्यों पर निर्णय में		बाहर काम पर जाने के निर्णय में		कृषि संबंधी कार्य में सहभागिता	
			म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में
1	अमदरी	10	4	40	2	20	1	10	7	70	9	90	3	30	7	70
2	बेनीबारी	10	6	60	5	50	3	30	6	60	8	80	5	50	8	80
3	बिलासपुर	10	6	60	8	80	3	30	6	60	7	70	5	50	9	90
4	थ्गरवी	10	2	20	5	50	3	30	8	80	9	90	4	40	7	70
5	पिपरखुंटा	10	5	50	5	50	5	50	9	90	9	90	6	60	7	70
	योग	**50**	**23**	**46**	**25**	**50**	**15**	**30**	**36**	**72**	**42**	**84**	**23**	**46**	**38**	**76**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसंधान हेतु चयन किए गए पांचों गॉव के 50 परिवारों में से महिलाओं की भागीदारी सामाजिक निर्णयों में 46 प्रतिशत, अपने जीवन साथी की स्वचयन में 50 प्रतिशत, विधवा या परित्यक्ता की पुनर्विवाह में 30 प्रतिशत, दैनिक जीवन के निर्णय में 72 प्रतिशत, घरेलू कार्यों के सम्पादन में 84 प्रतिशत, काम करने के लिए बाहर जाने के फैसले में 46 प्रतिशत और कृषि संबंधी कार्य करने में 76 प्रतिशत निश्चित है। अतः महिलाएं ज्यादातर घरेलू कार्य, दैनिक जीवन में निर्णय और कृषि कार्य में सहभागिता करने लगी हैं।

तालिका क्र. (02):– आर्थिक क्षेत्रों में पनिका जनजातीय महिलाओं की भूमिका
(म. सं. = महिला संख्या)

क्र.	गॉव का नाम	परिवार संख्या	बाजार–हाट जाने में		घरेलू सामान खरीदने में		फसल कटाई, मिंजाई एवं बिक्री		जानवर चराने में		मजदूरी/रोजगार से स्थिति सुधार में		वनोपज बिक्री / संग्रहण में		सरकारी नौकरी में	
			म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में
1	अमदरी	10	7	70	6	60	9	90	3	30	5	50	2	20	2	20
2	बेनीबारी	10	8	80	8	80	8	80	1	10	5	50	3	30	4	40
3	बिलासपुर	10	5	50	6	60	7	70	2	20	4	40	4	40	6	60
4	थ्गरवी	10	6	60	6	60	7	70	2	20	5	50	3	30	4	40
5	पिपरखुंटा	10	7	70	7	70	5	50	3	30	6	60	4	40	4	40
	योग	**50**	**33**	**66**	**33**	**66**	**36**	**72**	**11**	**22**	**25**	**50**	**16**	**32**	**20**	**40**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसंधान हेतु चयन किए गए पांचों गॉव के 50 परिवारों में से महिलाओं की भागीदारी आर्थिक क्षेत्रों में अपने फसल के कटाई, मिंजाई और बिक्री में सबसे ज्यादा 72 प्रतिशत, बाजार जाने और घरेलू सामान खरीदने में 66 प्रतिशत, रोजगार या मजदूरी से परिवारिक स्थिति को सुधारने में 50 प्रतिशत, सरकारी नौकरी में 40 प्रतिशत, वनोपज संग्रहण कर बिक्री करने और चरवाहे के रुप में क्रमशः 32 तथा 22 प्रतिशत है।

तालिका क्र. (03):– राजनैतिक क्षेत्र में पनिका जनजातीय महिलाओं की अभिरुचि का विवरण
(म. सं. = महिला संख्या)

क्र.	गॉव का नाम	परिवार संख्या	समाज की मुखिया		ग्राम पंचायत के सदस्य		जनपद / जिला पंचायत के सदस्य		स्वसहायता समूह के सदस्य / अध्यक्ष		राज्य स्तरीय जन प्रतिनिधि		संसद सदस्य बनने की अभिरुचि		अन्य	
			म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में
1	अमदरी	10	8	80	4	40	2	20	7	70	1	10	1	10	3	30
2	बेनीबारी	10	6	60	4	40	3	30	8	80	2	20	2	20	4	40
3	बिलासपुर	10	5	50	6	60	2	20	7	70	1	10	2	20	3	30
4	गिरवी	10	6	60	5	50	3	30	8	80	3	30	3	30	3	30
5	पिपरखुंटा	10	7	70	4	40	4	40	7	70	4	40	2	20	4	40
	योग	**50**	**32**	**64**	**23**	**46**	**14**	**28**	**37**	**74**	**11**	**22**	**10**	**20**	**17**	**34**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसंधान हेतु चयन किए गए पांचों गॉव के 50 परिवारों में से महिलाओं का राजनैतिक क्षेत्रों में सबसे ज्यादा स्वसहायता समूहों के अध्यक्षता करने में 74 प्रतिशत, अपने समाज के मुखिया के रुप में 64 प्रतिशत, ग्राम पंचायत के सदस्य पंच/सरपंच 46 प्रतिशत, जनपद/जिला पंचायत के सदस्य 28 प्रतिशत की सहभागिता है। इसके अलावा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के जन–प्रतिनिधि के रूप में क्रमशः 22 एवं 20 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी अभिरुचि जाहिर की हैं।

तालिका क्र. (04):– स्वास्थ्य क्षेत्र में पनिका जनजातीय महिलाओं की भूमिका एवं अभिरुचि का विवरण
(म. स. = महिला संख्या)

क्र.	गॉव का नाम	परिवार संख्या	घरेलू उपचार		ओझा से उपचार		आयुर्वेदिक उपचार		स्वास्थ्य केन्द्र में उपचार		डॉक्टरों से सलाह एवं उपचार		बाहर जाकर उपचार	
			म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में
1	अमदरी	10	4	40	1	10	2	20	8	80	9	90	3	30
2	बेनीबारी	10	6	60	3	30	5	50	7	70	8	80	5	50
3	बिलासपुर	10	6	60	3	30	8	80	9	90	7	70	5	50
4	गिरवी	10	2	20	4	40	5	50	8	80	8	80	4	40
5	पिपरखुंटा	10	5	50	5	50	5	50	9	90	9	90	6	60
	योग	**50**	**23**	**46**	**16**	**32**	**25**	**50**	**41**	**82**	**41**	**82**	**23**	**46**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसंधान हेतु चयन किए गए गॉवों के 50 परिवारों में से महिलाओं की भागीदारी स्वास्थ्य क्षत्रों में सबसे ज्यादा, स्वास्थ्य केंद्र में जाकर एवं डॉक्टरों सें सलाह लेकर उपचार 82 प्रतिशत, आयुर्वेदिक उपचार 50 प्रतिशत, घरेलू एवं बाहर जाकर उपचार 46 प्रतिशत तथा ओझा से उपचार मात्र 32 प्रतिशत ही रह गया हैं।

तालिका क्र. (05):– शैक्षणिक क्षेत्र में पनिका जनजातीय महिलाओं की भूमिका
(म. सं. = महिला संख्या)

क्र.	गॉव का नाम	परिवार संख्या	पूर्व – प्राथमिक		प्राथमिक		पूर्व – माध्यमिक		माध्यमिक		हायर सेकेण्डरी		स्नातक या अधिक	
			म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में	म. सं.	% में
1	अमदरी	10	5	50	10	100	10	100	9	90	8	80	4	40
2	बेनीबारी	10	6	60	9	90	8	80	8	80	7	70	6	60
3	थ्बलासपुर	10	4	40	8	80	8	80	6	60	5	50	3	30
4	गिरवी	10	9	90	9	90	9	90	9	90	7	70	5	50
5	पिपरखुंटा	10	9	90	8	80	9	90	7	70	6	60	4	40
	योग	**50**	**33**	**66**	**44**	**88**	**44**	**88**	**39**	**78**	**33**	**66**	**22**	**44**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसंधान हेतु चयन किए गए गॉवों के 50 परिवारों के महिलाओं की शैक्षिणिक क्षेत्रों में योग्यताएं प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर पर 88 प्रतिशत, माध्यमिक 78 प्रतिशत प्री प्राइमरी और उच्चतर स्तर पर 66 प्रतिशत तथा स्नातक या उससे अधिक आर्हता रखने वाली महिलाएं 44 प्रतिशत हैं।

तालिका क्र. (06):– चयनित गॉवों के पनिका जनजातीय महिलाओं की प्रत्येक क्षेत्र में भगीदारी प्रतिशतता

क्र.	गॉव का नाम	परिवार संख्या (क्षेत्रों में विकास अनुसार)	भागीदारी प्रतिशतता
1	समाजिक क्षेत्रों में	42	84
2	आर्थिक क्षेत्रों में	36	72
3	राजनैतिक क्षेत्र में	37	74
4	स्वास्थ्य क्षेत्र में	41	82
5	शैक्षणिक क्षेत्र में	44	88
	योग	**200**	**80**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसंधान हेतु चयन किए गए पांचों गॉव के परिवारों में से महिलाओं की भागीदारी शैक्षणिक क्षेत्रों में सबसे अधिक 88 प्रतिशत, समाजिक क्षेत्रों में 84 प्रतिशत, स्वास्थ्य क्षेत्र में 82 प्रतिशत, राजनैतिक क्षेत्र में 74 प्रतिशत तथा आर्थिक क्षेत्रों में 72 है। अतः महिलाएं सामाजिक निर्माण के इन ढ़ाचों को मजबूत करने में कुल 80 प्रतिशत औसत के दर से भागीदार हैं। जो उनके विकास को इन क्षेत्रों में स्पष्ट करता है।

<u>महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन</u> :–

- **<u>सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन</u>** :– वर्तमान में महिलाओं के निर्णय को भी समाज का अहम हिस्सा माना जा रहा है। सामाजिक कार्यक्रमों में महिलाओं की भूमिका पहले ना के बराबर होती थी, जैसे महिलाएं अपने पसंद से ना तो अपना जीवन साथी चुन सकती थी न ही वे किसी सामाजिक निर्णय का हिस्सा हो सकती थी। किन्तु वर्तमान में सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की सहमति ली जाती है, उनसे सुझाव भी लिया जाता है तथा महत्वपूर्ण निर्णयों में उनसे रायशुमारी की जाती है।
- **<u>आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन</u>** :– महिलाएँ जितनी आर्थिक रूप से सशक्त होंगी उतनी ही उनकी निर्णय क्षमता बढ़ेगी और वे परिवार, समाज व देश के विकास में सहयोगी बन पाएंगी। प्रारंभ में पनिका जनजाति महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। महिलाओं को सम्पति में कोई अधिकार नहीं होता था। बालिकाओं को बचपन से ही पराया धन

माना जाता था। किन्तु आज सरकार के विभिन्न योजनाओं के चलते बालिकाएँ पढ़–लिखकर अग्रसर हो रही हैं। वे विभिन्न विभाग में अपनी भूमिका निभा रही हैं और पैसे कमा कर अपने परिवार की आर्थिक मजबूत कर रही है। इस समुदाय की महिलाएं शासकीय सेवाओं की अतिरिक्त स्वःसहायता समुह जैसे उद्यमों में सलग्न हैं। उल्लेखनीय है कि आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ देश की समृद्धि में सहायक सिद्ध होंगी तथा आर्थिक स्वालम्बन उनकी निर्णय क्षमता में वृद्धि करेगा।

- **स्वास्थ्य क्षेत्र में परिर्वतन** :– यह एक बड़ा परिवर्तन है कि महिलाओं का स्वास्थ्य धार्मिक कारकों व प्रभावों से मुक्त होकर वास्तविक चिकित्सा उपायों की वैकल्पिक व्यवस्था को स्वीकार कर रही है। वर्तमान में महिलाएँ गर्भावस्था के दौरान निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर नियमित परीक्षण करवा रहे हैं तथा प्रसव हेतु स्वास्थ्य केन्द्र को प्राथमिकता दे रहीं हैं। समाज में पहले महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति बहुत ही दयनीय थी। गांव की महिलाएं पहले बीमार होने पर घरेलू उपचार, फूंक–झाड़ कराने लिए ओझा के पास या गॉव के ही वैद्य के पास इलाज के लिए भेजी जाती थी। किन्तु वर्तमान में महिलाएं ' शासकीय चिकित्सा सुविधाओं और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की ओर जाती दिखाई दे रही है। पूर्व की अपेक्षा शिशु मृत्यु दर एवं मातृ मृत्यु दर में कमी देखने को मिल रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ अब अपनी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो गईं हैं।
- **राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन** :– अब लोगों कों विभिन्न योजनाओं, अभियानों तथा शिक्षा के प्रचार–प्रसार से यह समझ आने लगा है कि महिलाएं भी समाज की एक अहम हिस्सा है, उनके भी मौलिक अधिकार है। उनकी भलाई एवं खुशी में घर–परिवार की खुशहाली है। अब ये भी माना जाने लगा है कि महिलाएं बौद्धिक क्षमता में पुरूष से आगे होती हैं पुरुषों के सामाजिक उलझनों और परेशानियों को सुलझाने में महिलाओं द्वारा बेहतर निर्णय लेने से समाज, गॉव, देश आगे बढ़ेगा और न्याय व्यवस्था कायम होगी। हमारे अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि जातिगत पंचायतों के संबंध में स्त्रियों की भूमिका भले ही नगण्य हो किन्तु संवैधानिक दृष्टि से स्थापित की गई पंचायतों में सभी प्रकार के पदों में महिलाओं की 50 प्रतिशत भागीदारी अनिवार्य हो गयी है। पहले समाज में महिलाओं को सिर्फ घरेलु कार्य के लिए बाध्य किया जाता था, उनको इस योग्य नही समझा जाता था कि वे सामाजिक तथा राजनैतिक मामलो में अपने सुझाव–निर्णय देने के काबिल हैं। इस वजह से उनको इन सब चीजों से दूर रखा जाता था। जो भी फैसला पुरुष मुखिया लेते थे उनको महिलाओं को मानने के लिए बाध्य होना पड़ता था। चाहे वह महिलाओं के लिए अमानवीय या क्रूर हो। महिलाएं किसी भी प्रकार के निर्णयों में दखल नहीं दे सकती थी। उनकों राजनीति से जुड़ी बातों का ज्ञान भी नहीं हुआ करता था। अतः यह महिलाओं के राजनीतिक उत्थान के लिये शुभ संकेत है।
- **शैक्षणिक क्षेत्र में परिवर्तन** :– वर्तमान में महिलाओं की शैक्षणिक स्तर में काफी सुधार आया है, उन्हें भी शिक्षा में बराबर का अधिकार दिया जाने लगा है, स्त्रियों की साक्षरता दर में हुई प्रगति को उत्साह जनक माना जा सकता है, साक्षरता किसी भी समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जिसमें महिलाओं की साक्षरता की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। समाज में पहले महिलाओं की शैक्षिणिक स्थिति बहुत ही चिंताजनक थी महिलाएं साक्षरता की दृष्टि से पिछड़ी हुई थी। इसका मुख्य कारण शिक्षा के प्रति लोगों की परम्परागत रूढ़िवादी मानसिकता थी महिलाओं में शिक्षा को गैर जरूरी माना जाता था। शिक्षा के क्षेत्र में शासकीय उपक्रमों और योजनाओं के कारण महिलाओं के शैक्षणिक स्तर में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे है। सभी समाजों में पुरूषों के समान धनार्जन की दिशा में योगदान देने के लिये महिलाएँ तीव्रता से अग्रसर हो रही है। छात्रवृत्ति और मध्यान्ह भोजन तथा आवासीय परिसरों के निर्माण के कारण से शिक्षा के क्षेत्र में बालिका समूह का वर्चस्व बढ़ा है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि देश की अन्य महिलाओं की तरह पनिका महिलाएँ भी परिवर्तन की बयार से अछूती नहीं रही हैं। परम्परागत रूढ़िवादी समाजों में स्त्रियों की निम्नतम और दयनीय स्थितियों की तुलना, वर्तमान समाज की महिलाओं से करना उचित नहीं होगा। परिवर्तन का आशय यह है कि **शासकीय योजनाओं की प्रभाव–शीलता**, सामाजिक रूढ़िवादिता और प्रतिबंधों के विरूद्ध कारगार उपाय सिद्ध हुई है। यदि लोकतांत्रिक व्यवस्था के अधीन शिक्षा, आर्थिक स्वावलम्बन, सक्रिय राजनीति में सहभागिता जैसे क्षेत्रों में शासकीय योजनाओं को लागू नहीं किया गया होता तो महिलाएं आज भी पूर्ववर्ती समाजों की बंदिनी होती। अतः यह उल्लेखनीय है कि शिक्षा, राजनैतिक और आर्थिक स्वावलम्बन के मिले–जुले प्रभावों ने स्त्रियों की मुक्ति के मार्ग प्रशस्त किये है। इनमें कोई आश्चर्य नहीं कि पनिका महिलाएँ भी इस परिवर्तन में लाभान्वितों की श्रेणी में आ खड़ी हुई है। स्पष्ट है कि समाज की परम्पराओं की तुलना में लोकतांत्रिक व्यवस्था की शिक्षा, राजनैतिक और

आर्थिक औदार्यता तथा अनिवार्यता ने पनिका महिलाओं के समक्ष उड़ने के लिये खुला आसमान छोड़ रखा है।

संदर्भ सूची :–

1. गोयल, जयति (2013), आज के परिवेश में नारी, कश्यप पबलिकेशन गाजियाबाद उत्तरप्रदेश।
2. देवी मंजू (2015), आपेक्षित परिवर्तन में महिलाओं की भूमिका, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो गृह मंत्रालय, नई दिल्ली।
3. शर्मा पी.डी. (2017), महिला सशक्तिकरण और नारीवाद, रावत पब्लिकेशन जयपुर।
4. पन्निकर रजनी (1970), भारतीय नारी प्रगति के पथ पर, दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
5. जैन एवं अन्य (2018), घरेलू हिंसा एवं महिला मानवाधिकार, गुना शहर के महिलाओं के संदर्भ में समाज शास्त्रीय अध्ययन, जर्नल ऑफ एडवांस एण्ड स्कालर्ली रिसर्चस् इन एलाइड एजुकेशन, वाल्यूम 105–3 पृ. सं. 66–69।
6. परमार एस. (2015), नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार, नई दिल्ली ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, पृ.सं 198–200।
7. बिसेंट जी. एवं अन्य (2020), जर्नल ऑफ द रॉयल स्टेटिकल सोसायटी, वाल्यूम 183–2, पृ.सं. 655–679।
8. श्रीवास्तव पी. (2015), भारतीय महिलायें परिवर्तन के दौर में, अमेजिंग पब्लिकेशन नई दिल्ली पृ. सं. 176–178।
9. चट्टोपाध्याय अरुंधती (2012), भारतीय राज्यों में स्त्री सशक्तिकरण योजना, वर्ष–56 अंक –6 योजना भवन नई दिल्ली, भारत।
10. तिर्की एस. (2021), वर्तमान परिवेश में मुरिया जनजाति महिलाओं की स्थिति, रिमार्किंग एन एनॉलिसीस एसआरएफ कानपुर, अंकः6–4, पृ.सं. 28–34।
11. https://Bharatdiscovery.org.>India
12. https://en.wikipedia.org.>India